IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दलित उपन्यासों में मोहनदास नैमिशराय की भूमिका

डॉ आभा झा

जिस सामाजिक ए धार्मिक और सांस्कृतिक परिवेश में मानव का जन्म होता उसका प्रभाव उसकी रचना पर भी होता है । मोहनदास नैमिशराय का जाम 5 सितंबर 1949 को मेरठ में दलित परिवेश में हुआ और वही पले – बढ़े भी । वे मेरठ के श जाटव गेट श या श चमार दरवाजा के नाम से जानी जाने वाली बस्ती में रहते थे । वे जिस परिवार में पैदा हुए थे वह सदियों से श चमारगिरी कर रहा था । जातीयता के नाम पर उन्हें स्कूल में सवर्ण बच्चे चमट्टे कहकर अपमानित करते थे ।

मोहनदास नैमिशराय हिन्दी दलित साहित्य के प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं । भारत का दलित समुदाय भारतीय समाज का सबसे प्रताड़ित और यातनाग्रस्त समुदाय रहा हैं । मोहनदास नैमिशराय इसी सबसे प्रताड़ित और यातनाग्रस्त दलित समुदाय के प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं । इनका दलित साहित्य ए खासकर दलित उपन्यास इस पीड़ित व उपेक्षित समाज की आवाज बनकर उभरा है । इनका उपन्यास इन पीड़ित जातियों व वर्गों के जीवन के हर पहलू – सामाजिक ए आर्थिक ए धार्मिक ए राजनीतिक व उससे जुड़ी समस्याओं पर न केवल रोशनी डालता है अपितु उचित मानवाधिकारों की मांग भी करता हैं । मोहनदास नैमिशराय ने अपने दलित उपन्यासों के माध्यम से दलित जीवन के दुख ए दर्द ए पीड़ा व घुटन को ही अभिव्यक्त नहीं किया है ए बल्कि उनको शिक्षा ए रोजगार आदि सुविधाओं के प्रति जागरूक भी बनाया हैं । दलित समाज का विद्रोही स्वर भी इनके उपन्यासों में उभर कर आया हैं ।

मोहनदास नैमिशराय ने बचपन से ही गरीबी और सामाजिक अपमान को झेला था । वे स्वयं दलित परिवार और परिवेश में जन्में और पले थे।अतः दलित जीवन के उपेक्षापूर्ण कटु सत्य का उन्हें अनुभव था । इसी अनुभव को उन्होंने अपने उपन्यासों में व्यक्त किया है । दलित उपन्यासों में मोहनदास नॅमिशराम की क्या भूमिका रही है ६ इसे उनके उपन्यास श क्या मुझे खरीदोगें ए श मुक्तिपर्व श वीरांगना झलकारी बाई ए श आज बाजार बन्द है श में देखा जा सकता हैं ।

मोहनदास नैगिशराय का पहला उपन्यास श क्या मुझे खरीदोंगे 1990 ई ० में प्रकाशित हुआ । यह एक दलित नारी सरिता की कहानी हैं । उपन्यासकार ने इसमें आधुनिक युग और महानगरीय परिवेश में स्त्रियों की वास्तविक स्थिति ए उत्पीड़न ए पुरूषों द्वारा किए जाने वाले अमानुषिक व्यवहार और अत्याचार का यथार्थ चित्तण किया हैं । उपन्यासकार ने इसमें नारी जीवन की करूणा और संघर्ष को रेखांकित किया हैं । मानव समाज प्रत्येक क्षेत्र में बदला है किन्तु स्त्रियों के प्रति पुरूषों की सोच आज भी आदिम या पारंपरिक हैं । उपन्यास में बम्बई नगर की विराट्ता एवं अंदरूनी कुरूपता का बड़े सुंदर ढंग से चित्रण किया गया हैं । उपन्यास की नायिका सरिता पिता की मृत्यु के पश्चात् माँ दमयंती के साथ रहती हैं । दमयंती ए सरिता को पढ़ाना चाहती हैं । सरिता के कॉलेज में पढ़ने वाला मनोज जब उसके साथ छेड़खानी करता है तो उसका सहपाठी सागर उसकी रक्षा करता हैं । इस घटना के बाद सरिता और सागर एक दूसरे के निकट आ जाते हैं । दोनों का प्यार सभी हदें पार कर जाता है । जब सरिता सागर पर शादी के लिए दबाव बनाती है तो सागर अपने परिवार की असहमति का बहाना बना देता है । सरिता दलित जाति की है ए इसलिए सागर कहता है कि हम दोनों घर से भाग कर शादी कर लेंगे । दोनों बम्बई भाग जाते हैं जहाँ सागर उसे अकेला छोड़कर घर लौट आता है । सरिता बदनामी के डर से वापस नहीं आती हैं

। उसे रमेश नामक लेखक सहारा देता है । दानों पति – पत्नी की तरह रहने लगते हैं । मोहित शर्मा नामक एक प्रकाशक सरिता को बहला – फुसला कर रमेश से अलग कर देता हैं । मोहित वासना का पुजारी है । जब उसका मन सरिता से भर जाता है तब वह उसे वेश्यावृति के लिए मजबूर करता हैं । तभी उसे मीरा नाम की कोई स्त्री मिलती है जो उसे पुरूषों के बगैर जीना सिखाती हैं । फिल्मी शैली में लिखे गये इस उपन्यास में शहर में भटक रही उन तमाम बदनसीब लड़कियों की कहानी है ए जिसे प्यार में घोखा मिलता है । इस उपन्यास में विवाह पूर्व प्रेम संबंधों द्वारा उत्पन्न होने वाली समस्याएँ खासकर दलित स्त्री के जीवन की जातिगत विषम परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण हैं । उपन्यासकार ने आधुनिकता की आँधी में खोये हुए युवक –युवतियों को सरिता के शोषित जीवन से सबक लेने की चेतावनी दी हैं । उपन्यास में स्त्रियों के कुत्सित ए घृणित देह – व्यापार से मुक्ति के दर्शन का प्रतिपादन कर स्त्रियों को सम्मानित व सामाजिक जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित किया है ।

मोहनदास नैमिशराय का दूसरा उपन्यास श मुक्तिपर्व श हैं । जिसका प्रकाशन सन् 1999 ई ० में हुआ था । देश में आजादी का जश्न मनाया जा रहा है ए वहीं दूसरी ओर दलित समाज अपनी दरिद्रता से मुक्ति के लिए विलाप कर रहा हैं । ऐसे में नैमिशराय जी के दिल में बार – बार प्रश्न उठ रहा है । इसी कशकश में उन्होंने श मुक्तिपर्व श उपन्यास की रचना की । वे मुक्तिपर्च श के संदर्भ में लिखते हैं कि श हम मुक्तिपर्व किसे कहें ६ जब देश आजाद हुआ उसे या जब किसी जाति या कुछ जातियों को आजादी मिली उसे। मुक्ति से अखिर तात्पर्य क्या हैं ? एक आदमी की मुक्ति या विशेष जाति की । (मुक्तिपर्व ए मोहनदास नैमिशराय ए मेरी बात) श मुक्तिपर्व श उपन्यास संघर्षशील दलित परिवार की एक ऐसी कहानी है जिसमें वे मारतीय समाज की विषमता में द्वन्द्वों के साथ जीना सीखते है । श मुक्तिपर्व श उपन्यास में आजादी के पहले दलितों की स्थिति और बाद में परिवर्तित दलित समाज का अंकन किया गया हैं । उपन्यास में नवाव अली वर्दी खाँ के यहाँ नौकरी करने वाला वंशी जाति से चमार है जो आजादी के दौर में

होन वाले परिवर्तन से प्रभावित होकर नौकरी छोड़ देता है । वंशी की पत्नी सुन्दरी जब बेटे को जन्म देती है तो वह परंपगत नामों को ठुकराकर बेटे का नाम सुनीत रखता हैं । सुनीत सुन्दर और होशियार है जो जाति के आधार पर होने वाले उपहास और अपमान को झेलजा हुआ अपनी पढ़ाई पूरी कर लेता है और अपनी जाति के लोगों के उद्धार के लिए बस्ती में ही अध्यापक का काम करने का निश्चय करता हैं । उपन्यास में अपमानित दलित समाज में जागृत होने वाली चेतना का चित्रण हैं ।

मोहनदास नैमिशराय के तीसरे उपन्यास श वीरांगना झलकारी बाई का प्रकाशन 2003 ई ० में हुआ । यह उपन्यास ऐतिहासिक पात्रा झलकारीबाई को आधार बनाकर लिखा गया हैं । सन् 1857 ई 0 के स्वतंत्रता संग्राम में झलकारी बाई का नाम महत्वपूर्ण हैं । रानी लक्ष्मीबाई की प्रिय सहेलियों में से एक झलकारी थी जिसने रानी के साथ समर्पित रूप से मित्रता ही नहीं की बल्कि झाँसी की रक्षा के लिए उसने अंग्रेजों का समना भी किया किन्तु यह पात्रा अब तक गुमनाम रही थी जिसे नैमिशराय ने उपन्यास के रूप में प्रस्तुत किया है । जब भी 1857 के स्वतंत्रा संग्राम की बात छिड़ती है तो रानी लक्ष्मीबाई का जिक्र जरूर होता है लेकिन लक्ष्मीबाई का साथ देने वाली उनकी हमशक्ल दलित महिला झलकारी बाई की उपेक्षा होती हैं । इस उपेक्षा का कारण बताते हुए नैमिशराय करते है . वह न तो रानी थी न पटरानी । वह किसी सामंत की बेटी भी नहीं थी तथा किसी जागीरदार की पत्नी भी नहीं । (दक्षिणांचल स्मारिका ए जुलाई 2008 ए लेख ऐतिहासिक उपेक्षित दलित नारी : वीरांगना झलकारी बाई ए दिलीप कुमार कसवे ए पृष्ठ –48 द्ध झलकारी भोजसा गाँव के सामान्य कोरी परिवार में जन्मी थी । झाँसी के पूरन कोरी के साथ उसका विवाह हुआ था । रानी लक्ष्मीबाई से प्ररित होकर झलकारी बाई अपने पति के साथ मिलकर सेना का गठन करने का प्रयास करती हैं । अंग्रेजों से हुई लड़ाई में स्वयं रानी का पोशाक पहनकर अंग्रेजी फौज का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करती हुई रानी को झाँसी से निकलने का मौका देती है । झलकारी बाई के चरित्र के बारे में दिलीप कुमार कसबे लिखते है – " कई प्रसंगों के आधार पर बताया जा सकता है कि वीरांगना झलकारी बाई बचपन से निडर स्वतंत्र प्रवृति की साहसी एवं स्वामीभक्त दलित नारी थी । झाँसी के संग्राम के शहीदों में झलकारी का इतिहास में कहीं भी नामोल्लेख न होना बड़ी शर्म की बात हैं । " (दक्षिणांचल स्मारिका श जुलाई –2006 पृष्ठ –48 द्ध

मोहनदास नैमिशराय का चौथा उपन्यास श आज बाजार बंद है' का प्रकाशन सन् 2004 ई ० में हुआ । यह उपन्यास वेश्याओं के जीवन संघर्ष तथा उनकी समस्याओं पर आधारित है । इसमें वेश्याओं के अन्तर्मन की छटपटाहट और वेश्यावृति से मुक्ति के लिए किए जाने वाले संघर्ष को चित्रित किया गया हैं । इस उपन्यास में देवदासी प्रथा जैसी घृणित धार्मिक परपरा ए अंधविश्वास ए पुरूष वर्ग की विलासप्रियता आदि कारणों से वेश्यावृति के व्यवसाय में उलझी दलित औरतों को जिन भयानक यातनाओं को सहना पड़ता है ए का चित्रण हैं । उपन्यास में इमादतपुर शहर की वेश्याओं में पुलिस द्वारा होने वाले अत्याचारों के खिलाफ आक्रोश उभर आता है । थाने पर पथराव किया जाता है तो शहर में तनाव बढ़ जाता हैं । पुलिस के दमनचक्र से वेश्याओं के आक्रोश को दबाने की कोशिश की जाती है ए किन्तु मीडिया के हस्तक्षेप से बात संसंद तक चली जाती हैं । शहर में इस बात को लेकर दंगा भड़क जाता हैं । इसी बीच उपन्यास का नायक सुमित जो कि पेशे से एक पत्रकार है शबनमबाई के कोठे पर आता है । वह वंश्याओं को मुक्ति दिलाना चाहता है और मुक्ति दिलाने के लिए एक आन्दोलन करता हैं । शबनाम बाई सुमित के विचारों से प्रभावित होकर वेश्यावृति छोड़ने का निर्णय लेती हैं । उसके कारण सभी वेश्याएँ इस घिनौने पेशे से छुटकारा पाने का प्रयास करती हैं । दलाल और पुलिस अपने लाभ के लिए इस सुधार को रोकना चाहते हैं तो सारी वेशएँ संगठित होकर इसका विरोध करती हैं । पन्द्रह अगस्त के राष्ट्रीय त्यौहार के दिन सभी वेश्याएँ अपना धंधा बंद कर देती हैं । ग्राहक आते हैं और चले जाते हैं क्योंकि 'आज बाजर बंद हैं' ।

स्पष्ट है कि मोहनदास नैमिशराय के दलित उपन्यास हिन्दी दलित साहित्य की अनुपम उपलब्धि हैं । ये उपन्यास दलितों की दयनीय ए शोषित ए अपमानित जीवन को उजागर करके शोषण के विरूद्ध उनके आन्दोलनात्मक रूख की ओर संकेत करते हैं जो दलित साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है । आजादी के पश्चात् दलितों के सामाजिक ए धार्मिक और राजनीतिक जीवन में क्रांति लाने में जिन दलित उपउपन्यासकारों ने योगदान दिया उनमें मोहनदास नैमिषराय महत्त्वपूर्ण हैं।

आधार – ग्रंथ सूची

(1 द्ध क्या मुझे खरीदोगे श ए मोहनदास नैमिशराय ए अमीबा प्रकाशन ए नई दिल्ली ए 1990
; 2 द्ध श मुक्तिपर्व श मोहनदास नैमिशराय प्रवीणए प्रकाशन ए नई दिल्ली ए 1999 ।
(३) ष्वीरांगना झलकारी बाई श ए मोहनदास नैमिशराय ए राधाकृष्ण प्रकाशन ए दिल्ली ए 2003
; 4 द्ध श आज बाजार बंद है श मोहनदास नैमिशराय ए वाणी प्रकाशन ए नई दिल्ली –2004

संदर्भ – ग्रंथ सूची

(1ण द्ध दक्षिणांचल स्मारिका ए जुलाई –2006
; 2ण द्ध श आधुनिकता के आइने में दलित श ए संपादक – अभय कुमार दुबेए वाणी प्रकाशन ए नई दिल्ली ए 2008
; 3ण द्ध श दलित साहित्य चिंतन के विविध आयाम' ए एन ० सिंह ए आम प्रकाशन ए बंबई ए 1996
; 4ण द्ध श दलितों के रूपांतरण की प्रक्रिया श ए नरेन्द्र सिंह ए राधाकृष्ण प्रकाशन ए नई दिल्ली ए 1993 ;5ण द्ध श उपन्यास – साहित्य में दलित समस्या एवं समाधान' श श्यौराज सिंह बेचन ए अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीक्यूटर्स ए नई दिल्ली ए 2014